

जब्तरी-मार्च 2022

ISSN 2321 - 4279

समय सुरभि अनंत

शोध एवं साहित्यिक चेतना की संवाहिका



संपादक : नरेन्द्र कुमार सिंह



समय सुरभि अनंत समय सुरभि अनंत समय सुरभि अनंत समय सुरभि अनंत
समय सुरभि अनंत समय सुरभि अनंत समय सुरभि अनंत समय सुरभि अनंत
समय सुरभि अनंत समय सुरभि अनंत समय सुरभि अनंत समय सुरभि अनंत

सिलसिला

समय सुरभि अनंत समय सुरभि अनंत समय सुरभि अनंत समय सुरभि अनंत
समय सुरभि अनंत समय सुरभि अनंत समय सुरभि अनंत समय सुरभि अनंत
समय सुरभि अनंत समय सुरभि अनंत समय सुरभि अनंत समय सुरभि अनंत

आलेख

- समय सुरभि और मेरी रचना यात्रा.....-राजीव कुमार सिंह -08
- साहित्य के क्षेत्र में कीर्तिमान.....-राजेन्द्र राजन -09
- समय सुरभि अनंत: यात्रा अन्तर्यात्रा...-डॉ.अमरसिंह वधान -10
- लेखनी से वसंत की वर्षा.....-हरिबल्लभ सिंह आरसी -12
- समय सुरभि अनंत का सतत प्रवाह...-ओमीश परुथी -13
- आत्माभूति की अभिव्यक्ति.....-डॉ.पशुपतिनाथ उपाध्याय -14
- टेढ़ी खीर है पत्रिका को जीवित...-सुरेश चौहान -15
- साहित्यिक पत्रिका को बाजार नहीं...-अंजना वर्मा -15
- उर्वशी! अपने समय का सूर्य हूँ मैं...-अजीत कुमार राय -16
- रेणु, नागार्जुन के गाँव से.....-डॉ.महेशचंद्र चौरसिया -20
- निराला के उपन्यासों में...-राजेन्द्र वर्मा -24
- हिन्दी की प्रथम पत्रिका.....-डॉ.अमरसिंह वधान -30
- असम में हिन्दी पत्रकारिता.....-डॉ.मनिका शङ्कीया -31
- बिहार की पत्रकारिता के आदि स्तंभ...-अमित कुमार मिश्र -33
- हिन्दी की लघुपत्रिकाएं स्थिति और...-डॉ.पशुपतिनाथ उपाध्याय -36
- ई-पत्रिका उपयोगी है पर.....-ओमप्रकाश क्षत्रिय प्रकाश-40
- चंद तस्वीरें बुताँ चंद हसीनों के....-मदन मोहन 'अरविन्द' -43
- समकालीन हिन्दी काव्य में.....-डॉ.रेशमी पांडा मुखर्जी -44
- स्त्री अस्मिता और हिन्दी महाकाव्य...-सीमा कुमारी -48
- विचार, उपलब्धियाँ संकल्प....-डॉ.प्रणव भारद्वाज -50
- शिक्षित समाज, समृद्ध समाज....-सर्वेश कुमार -53
- २१वी.सदी की हिन्दी बाल-कविता..-डॉ.शकुन्तला कालरा -54
- बाल साहित्य : तपोवन भूमि...-सुनीता शर्मा -60
- खुदा जुदा हुआ.....-हरजिंदर सिंह सेठी -62
- लघुकथा की विकास यात्रा...-प्रो.मिथिलेश कुमारी -64

- 69 डॉ.मेहता नागेन्द्र सिंह -साहित्य में वर्णित वैचारिक प्रदूषण
- 80 डॉ.सारिका मुकेश -अधरों के बिस्तर पर गान सो..
- 82 डॉ.चन्द्रभानु प्र.सिंह -बिहार के प्रथम प्रधानमंत्री सह मुम्बई
- 84 नरेन्द्र किशोर सिन्हा -उर में बसी उर्वशी
- 86 डॉ.रेणु सिंह -शिक्षा की चुनौतियाँ औ वर्तमान
- 89 शीतल देवा -शिक्षक अभिभावक संबंध
- 99 रामबाबू नीरव -लोकनाट्य कला नौटंकी.....
- 102 प्रफुल्लचंद्र ठाकुर -ओ.टी.टी प्लेटफॉर्म:मनोरंजन का
- 105 डॉ.रानू मुखर्जी -गिरीश कर्नाड ने नाटक विधा .
- 108 डॉ.रामनरेश पंडित 'रमण' -नई कविता में जगदीश गुप्त का.
- 112 डॉ.वीणा विज 'उदित' -प्रवासी साहित्य एवं संस्कृति
- 115 डॉ.सुकन्या मेरी जे. -वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में....
- 117 डॉ.सूमा टी -कन्नड़ के क्रांतिकारी संत....
- 130 प्रभात कुमार राय -आध्यात्मिकता का वैज्ञानिक....
- 131 डॉ.त्रिपुरा झा -काव्य अभिव्यक्ति का.....
- 143 डॉ.नागरत्ना एन.राव -कन्नड़ कथा साहित्य में.....
- 147 डॉ.जसदीप मोहन -भारतीय चिंतन परंपरा और....
- 166 इंजी.सुनील कुमार -भूमिहार ब्राह्मण, नारायण राजतंत्र
- 181 वैदेही शरण सिंह -भारतीय किसान की दुर्दशा....
- 182 रामकिशोर सिंह 'विरागी' -सफलता के तत्व.....
- 184 प्रदीप कुमार 'चित्रांशी' -भारतीय लोक संस्कृति का....
- 186 आलोक मिश्र -उपभोक्तावाद और ग्लोबल....

साक्षात्कार

- डॉ.श्याम सखा श्याम से.....-डॉ.अशोक कुमार गुप्त -177

कहानी

- पवन जैन-52 • समीर उपाध्याय-66 • नीना सिन्हा-68 • विमला नागला-72 • राकेश कुमार-78 • राम रतन प्र.सिंह रत्नाकर-90
- राजीव कुमार सिंह-96 • वंदना सहाय-101 • डॉ. प्रदीप कुमार शर्मा-103 • दिलीप भाटिया-116 • अमर शंकर झा 'सुब्बा'-121
- कला कौशल-122 • अंजना वर्मा-125 • श्यामल बिहारी महतो-129 • डॉ.उर्मिला शर्मा-133 • डॉ.नलिनी रंजन सिंह-134
- महेश कुमार केशरी-146 • डॉ.अभिषेक कुमार-149 • नीलू चौधरी-150 • कृष्ण मनु-155 • पंकज पाण्डेय-157
- किरण सिंह-159 • सुमन कुमार सिंह-172 • राजेन्द्र परदेसी-174 • डॉ. रवीन्द्र कुमार सिन्हा-176

समीक्षायण

- कॉफी टाइम्स: १५१ लघुकथाएं.....-पूनम आनंद -201
- जग में नाम कमाएंगे.....-रेखा भारती मिश्र -202
- गागर में सागर.....-राम बालक सिंह -203
- जीवन का पैरामीटर.....-रवीन्द्र नाथ प्र.सिंह -204
- मुस्तरी बेगम.....-शशि कांडपाल -205
- ऊँट पहाड़ के नीचे.....-रमेश मनोहरा -206
- सूरज डूबने से पहले.....-प्रेरणा गुप्ता -207
- स्मृतियों के वातायन से.....-डॉ.रामकृष्ण -208
- मोह के धागे.....-वीणा विज 'उदित' -209
- हरसिंगारित वचनिकाएं.....-डॉ.रवीन्द्र कुमार सिन्हा -210
- शिशु और संभावनाएं.....-डॉ.अंजेश कुमार -210
- प्रणाम बाबा.....-डॉ.कीर्तिनारायण मिश्र -211

अनुरोध

'समय सुरभि अनंत' दिनकर माटी बेगूसराय (जिला मुख्यालय) से प्रकाशित एक उत्कृष्ट पत्रिका है । यह लंबी आयु तक जीवित रह सके। इस निमित्त आर्थिक सहयोग, चेक या NEFT द्वारा सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, बेगूसराय

खाता क्रमांक- 1724103564
IFSC- CBIN0-283187

संपादक 'समय सुरभि अनंत' के नाम पर प्रेषित कर सकते हैं। राशि जमा करने के पश्चात् आप मोबाईल न.-94309 02695 पर सूचित करें ।

• समय सुरभि और मेरी रचना यात्रा.....	-राजीव कुमार सिंह	-08
• साहित्य के क्षेत्र में कीर्तिमान.....	-राजेन्द्र राजन	-09
• समय सुरभि अनंत: यात्रा अन्तर्यात्रा...	-डॉ.अमरसिंह वधान	-10
• लेखनी से वसंत की वर्षा.....	-हरिबल्लभ सिंह आरसी	-12
• समय सुरभि अनंत का सतत प्रवाह...	-ओमीश परुथी	-13
• आत्माभूति की अभिव्यक्ति.....	-डॉ.पशुपतिनाथ उपाध्याय	-14
• टेढ़ी खीर है पत्रिका को जीवित...	-सुरेश चौहान	-15
• साहित्यिक पत्रिका को बाजार नहीं...	-अंजना वर्मा	-15
• उर्वशी! अपने समय का सूर्य हूँ मैं...	-अजीत कुमार राय	-16
• रेणु, नागार्जुन के गाँव से.....	-डॉ.महेशचंद्र चौरसिया	-20
• निराला के उपन्यासों में...	-राजेन्द्र वर्मा	-24
• हिन्दी की प्रथम पत्रिका.....	-डॉ.अमरसिंह वधान	-30
• असम में हिन्दी पत्रकारिता.....	-डॉ.मनिका शङ्कीया	-31
• बिहार की पत्रकारिता के आदि स्तंभ...	-अमित कुमार मिश्र	-33
• हिन्दी की लघुपत्रिकाएं स्थिति और...	-डॉ.पशुपतिनाथ उपाध्याय	-36
• ई-पत्रिका उपयोगी है पर.....	-ओमप्रकाश क्षत्रिय प्रकाश	-40
• चंद तस्वीरें बुताँ चंद हसीनों के....	-मदन मोहन 'अरविन्द'	-43
• समकालीन हिन्दी काव्य में.....	-डॉ.रेशमी पांडा मुखर्जी	-44
• स्त्री अस्मिता और हिन्दी महाकाव्य...	-सीमा कुमारी	-48
• विचार, उपलब्धियाँ संकल्प....	-डॉ.प्रणव भारद्वाज	-50
• शिक्षित समाज, समृद्ध समाज....	-सर्वेश कुमार	-53
• २१वी.सदी की हिन्दी बाल-कविता..	-डॉ.शकुन्तला कालरा	-54
• बाल साहित्य : तपोवन भूमि...	-सुनीता शर्मा	-60
• खुदा जुदा हुआ.....	-हरजिंदर सिंह सेठी	-62
• लघुकथा की विकास यात्रा...	-प्रो.मिथिलेश कुमारी	-64

- 69 डॉ.मेहता नागेन्द्र सिंह
- 80 डॉ.सारिका मुकेश
- 82 डॉ.चन्द्रभानु प्र.सिंह
- 84 नरेन्द्र किशोर सिन्हा
- 86 डॉ.रेणु सिंह
- 89 शीतल देवा
- 99 रामबाबू नीरव
- 102 प्रफुल्लचंद्र ठाकुर
- 105 डॉ.रानू मुखर्जी
- 108 डॉ.रामनरेश पंडित 'रमण'
- 112 डॉ.वीणा विज 'उदित'
- 115 डॉ.सुकन्या मेरी जे.
- 117 डॉ.सूमा टी
- 130 प्रभात कुमार राय
- 131 डॉ.त्रिपुरा झा
- 143 डॉ.नागरत्ना एन.राव
- 147 डॉ.जसदीप मोहन
- 166 इंजी.सुनील कुमार
- 181 वैदेही शरण सिंह
- 182 रामकिशोर सिंह 'विरागी'
- 184 प्रदीप कुमार 'चित्रांशी'
- 186 आलोक मिश्र

● डॉ.श्याम सखा श्याम से..... -डॉ.अशोक कुमार गुप्त -177

● पवन जैन-52 ● समीर उपाध्याय-66 ● नीना सिन्हा-68 ● विमला नागला-72 ● राकेश कुमार-78 ● राम रतन प्र.सिंह रत्नाकर-90
● राजीव कुमार सिंह-96 ● वंदना सहाय-101 ● डॉ. प्रदीप कुमार शर्मा-103 ● दिलीप भाटिया-116 ● अमर शंकर झा 'सुब्बा'-121
● कला कौशल-122 ● अंजना वर्मा-125 ● श्यामल बिहारी महतो-129 ● डॉ.उर्मिला शर्मा-133 ● डॉ.नलिनी रंजन सिंह-134
● महेश कुमार केशरी-146 ● डॉ.अभिषेक कुमार-149 ● नीलू चौधरी-150 ● कृष्ण मनु-155 ● पंकज पाण्डेय-157
● किरण सिंह-159 ● सुमन कुमार सिंह-172 ● राजेन्द्र परदेसी-174 ● डॉ. रवीन्द्र कुमार सिन्हा-176

● कॉफी टाइम्स: १५१ लघुकथाएं.....	-पूनम आनंद	-201
● जग में नाम कमाएंगे.....	-रेखा भारती मिश्र	-202
● गागर में सागर.....	-राम बालक सिंह	-203
● जीवन का पैरामीटर.....	-रवीन्द्र नाथ प्र.सिंह	-204
● मुस्तरी बेगम.....	-शशि कांडपाल	-205
● ऊँट पहाड़ के नीचे.....	-रमेश मनोहरा	-206
● सूरज डूबने से पहले.....	-प्रेरणा गुप्ता	-207
● स्मृतियों के वातायन से.....	-डॉ.रामकृष्ण	-208
● मोह के धागे.....	-वीणा विज 'उदित'	-209
● हरसिंगारित वचनिकाएं.....	-डॉ.रवीन्द्र कुमार सिन्हा	-210
● शिशु और संभावनाएं.....	-डॉ.अंजेश कुमार	-210
● प्रणाम बाबा.....	-डॉ.कीर्तिनारायण मिश्र	-211

अ
नु
रो
ध

‘समय सुराधि अनंत’ दिनकर माटी बेगूसराय (जिला मुख्यालय) से प्रकाशित एक उत्कृष्ट पत्रिका है । यह लंबी आयु तक जीवित रह सके। इस निमित्त आर्थिक सहयोग, चेक या NEFT द्वारा सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, बेगूसराय

खाता क्रमांक- 1724103564
IFSC- CBIN0-283187

संपादक 'समय सुरधि अनंत' के नाम पर प्रेषित कर सकते हैं। राशि जमा करने के पश्चात् आप मोबाईल न.-94309 02695 पर सूचित करें।



डॉ. मनिका शइकीया

असम में हिन्दी पत्रकारिता: दशा एवं दिशाएँ

रहे हैं। असम में पत्रकारिता की इस लंबी परिक्रमा में असमिया के साथ-साथ बंगाली, हिन्दी, नेपाली बोडो आदि भाषाओं में भी अखबार, पत्रिकाओं का प्रकाशन हुआ। असम को 'मिनी इंडिया' कहा जाता है। पूर्व स्वाधीनता के समय से ही भारत वर्ष के विभिन्न प्रांतों से प्रव्रजन होने लगा था। असम से हिन्दी के पारस्परिक संबंध पर अगर विचार करें, तो देखा जाता है कि चौदहवीं सदी से ही हिन्दी भाषी प्रदेशों के साथ असम का संबंध बना। जब असम के प्राण प्रतिस्थापक, समाज संस्कारक, नव वैष्णव धर्म के पुनः संस्थापक महापुरुष श्रीमंत शंकरदेव ने पदयात्रा करके भारत के प्रायः तीर्थस्थलों का परिभ्रमण करके वापस आकर एक अभिनव भाषा 'ब्रजबुलि' का उद्भावन किया और इस भाषा में ही उन्होंने अपने धर्मग्रंथों की रचना की। 'ब्रजबुलि' भाषा संस्कृत, मैथिली, ब्रज और प्राचीन असमिया भाषाओं का समिश्रण है। प्रश्न उठता है कि इतिपूर्व असम में एक प्रौढ़ भाषा होते हुए भी श्रीमंत शंकरदेव को 'ब्रजबुलि' जैसी समिश्रित भाषा की आवश्यकता क्यों हुई? इस संबंध में बापचन्द्र महंत ने 'भारतीय जनमानस और महापुरुष शंकरदेव' शीर्षक निबंध में लिखा है—“शंकरदेव के आदर्श और उपदेश केवल असम भूमि के लिए ही नहीं थे। वे (श्रीमंत शंकरदेव) अपने आदर्शों तथा उपदेशों को असम के बाहर भी प्रचार करना चाहते थे।”

हलधर भुंडिया का कहना है—“महापुरुष शंकरदेव को भी हम राष्ट्रभाषा का एक प्राचीन प्रचारक मान सकते हैं। क्योंकि उनके द्वारा बरगीत, अंकीय भाउना (धार्मिक नाटक) आदि की भाषा के साथ प्राचीन हिन्दी का अंतर बहुत कम है।”

संक्षेप में कह सकते हैं कि असमिया और हिन्दी भाषा का समन्वय श्रीमंत शंकरदेव (1449-1568) युग से ही चलता आ रहा है। आगे चलकर भी इसकी गति मंद नहीं पड़ी। 1832 ई. में ही देशभक्त तरुणराम फुकन के दादा जी यज्ञोराम खारघरीया ने हिन्दी में किताब लिखने का प्रयास किया था और असम के लोगों को भी हिन्दी सीखने-सिखाने की अपील की थी, क्योंकि उन्होंने हिन्दी की विश्वासयोग्यता, उज्ज्वल भविष्य का अनुमान कर लिया था। स्वाधीनता आंदोलन ने मानो सम्पूर्ण देशभर में हिन्दी को प्रचारित करने का अवसर प्रदान किया। असम के विशिष्ट मुक्तियोद्धा कृष्णनाथ शर्मा ने खेल-जीवन में ही 'रामचरित मानस' का असमिया में अनुवाद किया था। असम के प्रथम मुख्यमंत्री गोपीनाथ बरदलै ने भी हिन्दी प्रसार में अहम् भूमिका निभाई।

हिन्दी पत्रकारिता में ई. 1919 का वर्ष असम के लिए स्मरणीय है। इसी वर्ष डिब्रुगढ़ शहर से समाजसेवक विश्वेश्वर दत्त शर्मा की सम्पादन में 'प्रकाश' नामक पत्रिका का प्रकाशन हुआ। इसके प्रायः सत्रह वर्ष बाद पुनः इसी शहर से पानालाल राजपुरोहित के सम्पादन में 'नवजागृति' नामक हिन्दी समाचार पत्र प्रकाशित होने का उल्लेख मिलता है। भले ही इसकी आयु बहुत कम रही, लेकिन कम दिनों में ही कई लेखकों की सृष्टि करने में इस अखबार का प्रयास सराहनीय रहा। भारत त्याग आंदोलन के जोरदार प्रयास के लिए जिन अखबारों का प्रकाशन हुआ था, उनमें से कोलकाता से प्रकाशित 'करो या मरो' (1942) का असमिया अनुवाद का दायित्व निर्वाहन पं. ध्यानदास ने किया। पूर्णचन्द्र गोस्वामी की प्रेस से प्रकाशित इस अखबार ने आंदोलन से जुड़े नेताओं तक वार्ता पहुँचाने में सहायता की थी। कोलकाता से प्रकाशित 'अकेला' (1943) का प्रकाशन बाद में 1947 से असम की तीनसुकीया से होने लगा। उल्लेखनीय बात यह है कि उच्च मान विशिष्ट इस पत्रिका ने अनेक समस्याओं से जूझते हुए सन् 1997 में स्वर्ण जयंती वर्ष मनाया। इनके अतिरिक्त शिलांग (उस समय असम की राजधानी) से प्रकाशित 'आज का संसार' (संपादक-विश्वनाथ उपाध्याय 1948), 'विश्वामित्र' (1948), 'शंखनाद' (संपादक-नथपाल शर्मा, 1947), 'राष्ट्रसेवक' (असम राष्ट्रभाषा प्रसार समिति, 1951), 'पूर्वज्योति' (संपादक-छगनलाल जैन

मनुष्य की समस्याओं के संबंध में मनुष्य की धारणा को मजबूत करना ही संवाद सेवा का मूल लक्ष्य है। चूँकि मनुष्य सामाजिक प्राणी है, इसलिए केवल अपना, अपने कुटुम्ब अथवा सम्प्रदाय तक ही सीमित न रहकर देश तथा भौगोलिक क्षेत्र पारकर दूसरे देश की जानकारी लेना उसका स्वभाव है। और, इसी जिज्ञासा के चलते संवाद-पत्र का प्रचलन होना माना जाता है।

असम में आहोम राज्य (1228-1826) में ही संवाद-पत्र का बीजारोपण हुआ था; जब आहोम स्वर्गदेवों (राजाओं) ने अपने कर्मचारियों को यह निर्देश दिया कि उन्हें जो देखने को अथवा सुनने को मिले, तुरन्त लिपिबद्ध करके रखें। आधुनिक पत्रकारिता की शुरुआत ईसाई मिशनरियों ने 'अरुणोदय' (1846-82) के माध्यम से किया था। यो तो इसके द्वारा ईसाई धर्म प्रचार करना ही मूल उद्देश्य था, लेकिन धीरे-धीरे स्थानीय आशा-आकांक्षाओं को भी प्रतिफलित करने लगे। इसके पश्चात् असम से कलकत्ता में पढ़ने गये कुछ युवकों की प्रवेष्टा से 'जोनाकी' (1889-1903) नामक एक-दूसरी पत्रिका का प्रकाशन हुआ। पारचात्य प्रभाव के फलस्वरूप इतिपूर्व कोलकाता आदि देश के विभिन्न प्रांतों में हो रहे बौद्धिक एवं अभिव्यक्तिक परिवर्तन से परिचित इन छात्रों ने भी असमिया भाषा-साहित्य में परिवर्तन लाने के उद्देश्य से इस पत्रिका की शुरुआत की, जिसमें युगीन आवश्यकताएँ एवं इतिपूर्व भारतीय साहित्य पर प्रभाव छोड़े रोमांटिसिज्म की विशेषताओं के अनुरूप साहित्य सृजन प्रक्रिया भी इस पत्रिका के माध्यम से हुआ। तब से लेकर अद्यावधि तक शताधिक अखबार, पत्रिकाओं के प्रकाशन हो

1957), 'दीप' (संपादक-निर्मल कुमार बेरिवाल और निरुपमा 1959), 'रणभेरी' (संपा. नवाब सिंह रघुवंशी 1962) आदि का असम के हिन्दी पत्रकारिता में सराहनीय योगदान रहा। इनमें से अधिकांश कम समय के लिए ही सामने आये, फिर भी असम जैसी एक मिश्रित भाषा-भाषी लोगों के मध्य रह रहे हिन्दी भाषी लोगों की जिज्ञासापरक आवश्यकताओं की पूर्ति में समयोपयोगी कदम उठाये। हर्ष की बात यह है कि इनमें से 'राष्ट्रसेवक' (असम राष्ट्रभाषा प्रसार समिति, 1951) पत्रिका लंबी अवधि के बाद पुनः प्रकाशित हो रही है और अब इसे यू.जी.सी. केयर लिस्ट में भी जगह मिल गयी है।

इसी बीच कई बहुभाषिक पत्रिका, अखबारों का भी प्रकाशन हुआ। इनमें से के.बि.नेपाली द्वारा संपादित हिन्दी-नेपाली उभय भाषा में प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका 'बिंदु' (1971), अनुराग प्रधान द्वारा संपादित त्रिभाषिक (हिन्दी, नेपाली, असमिया) पत्रिका 'नवध्वनि' (1972) ने उल्लेखनीय सहयोग किया। असम में रहने वाली हिन्दी भाषी महिलाओं की उपयोगी पत्रिका 'असम ज्योति' (संपा. लावण्य गौ 1976) का नाम भी असम में हिन्दी पत्रकारिता की दुनिया में सदा आदर के साथ लिया जायेगा। परवर्ती समय में इस पत्रिका का नाम 'असम प्रभाकर' रखा गया। इनके साथ-साथ 'पार्षद' (1974), 'मेरी कलम' (संपा.-जी.एस.मधुप), 'जय हिन्द' (संपा.-कृष्ण नारायण प्रसाद 'मागध' 1974), 'असम प्रदीप' (संपा.-सूर्यवंशी चौधरी, 1975) 'जागृत' (संपा.-ओंकार शर्मा, 1977), 'रजनी गंधा' (संपा.-शंभु शर्मा, 1983), 'संवाद' (संपा.-चन्द्र भूषण शर्मा), 'समन्वित' (भारतीय भाषा परिषद द्वारा प्रकाशित, संपा.-बापचन्द्र महंत, 1986), 'भारत भूमि' (संपा.-अशोक राज, 1988) आदि ने पत्रकारिता के क्षेत्र को विकसित करने का प्रयास तो किया, लेकिन इनमें से अधिकांश के प्रकाशन दो-तीन अंक के बाद बंद हो गये। 'अकंला और 'जागृत' ही दीर्घ समय तक अपने वजूद में बने रहे। 1992 में राष्ट्रभाषा प्रचार मंच, नलबाड़ी द्वारा 'मंच भारती' नामक पत्रिका का प्रकाशन किशन कुमार जालेवाल के संपादन में हुआ,

जिसका 27 अंक अब तक प्रकाशित हो चुके हैं। रविशंकर रवि ने गुवाहाटी से सन् 1997 में 'उलुपी' नामक पत्रिका का संपादन, प्रकाशन प्रारम्भ किया था। इस पत्रिका का नाम पूर्वोत्तर की महाभारत कालीन नगा युवती उलुपी के नाम पर रखा गया। 'उलुपी' के माध्यम से रविशंकर रवि ने असमिया की शताधिक कहानियाँ अब तक हिन्दी में ला चुके हैं। 'उलुपी' के जरिए रवि ने हिन्दी के एक लाख से अधिक पाठकों तक पूर्वोत्तर का सहित्य पहुँचाया है।

इसके अतिरिक्त 'असम प्रदीप' और केन्द्रीय हिन्दी संस्थान द्वारा प्रकाशित 'समन्वय पूर्वोत्तर' भी विशेष भूमिका निभा रही है। इसने पूर्वोत्तर के लोक-साहित्य तथा आधुनिक, समकालीन साहित्य से हिन्दी समाज को परिचित कराया है। असम में हिन्दी पत्रकारिता के संबंध में एक कहावत है-डिब्रूगढ़ ने जन्म दिया, तिनचुकीया ने पाला और गुवाहाटी ने विकास दिया। इसी प्रकार यह भी कहा जाता है कि जिस बात को डिब्रूगढ़ आज सोचेगा, पूरा असम उसे कल सोचेगा।

एक दैनिक समाचार-पत्र की आवश्यकता की पूर्ति हेतु सन् 1963 में रामशंकर त्रिपाठी ने 'दैनिक लोकमान्य' का श्री गणेश किया। हाँलाकि अधिक वर्षों तक इसे आगे बढ़ा न पाये। फिर भी पत्रकारिता के इतिहास में इसे सादर स्मरण किया जायेगा। असम में हिन्दी पत्रकारिता (दैनिक) की सही मायने में शुरुआत तो 'पूर्वांचल प्रहरी' से ही हुई। 1989 में असम के प्रतिष्ठित व्यवसायी जी.एल.आगरवाला ने जी.एल.पब्लिकेशन्स की स्थापना करके इस पत्रिका का प्रकाशन किया। इसके कार्यवाहक संपादक थे कृष्णमोहन अग्रवाल। उत्कृष्ट लेख, सुन्दर छपाई से पाठकों को आकर्षित करने में आजतक यह समर्थ रहा है। इसी वर्ष एक और समाचार पत्र 'सेण्टिनल' प्रकाशित हुआ। संपादक थे विशिष्ट पत्रकार, साहित्यिक राधिका मोहन भागवती। भागवती के सुदक्ष संचालन में प्रथम वर्ष में ही पत्रकारिता का उच्च सम्मान 'मातृश्री' सम्मान मिला। वर्तमान में भी असम में यह पत्रिका लोकप्रिय है। जी.एल. पब्लिकेशन्स से 'सप्तसेतु' नामक एक अन्य

अखबार भी 1991 से प्रकाशित हो रहा है। इस अखबार को प्रारंभ में जितनी लोकप्रियता मिली थी, वर्तमान समय में इसकी गरिमा कम हो गयी है। अन्य एक अखबार-'पूर्वांचल प्रहरी' का भी योगदान उल्लेखनीय है।

इस प्रकार देखा जाता है कि इस सम्पूर्ण अवधि में असमिया भाषा प्रधान राज्य में बसे हुए हिन्दी भाषी लोगों को देश-दुनिया की जानकारी देने के लिए विभिन्न राजनीतिक, सामाजिक विषयों से परिचय करवाने के लिए, असम राज्य के विविध विषयों से संपर्क रखने वाले विषयों की जानकारी देकर हिन्दी भाषी लोगों के साथ इस राज्य का सु-सम्पर्क बनाने में इन पत्रिकाओं तथा अखबारों का विशेष योगदान रहा है। असम की आशा-आकांक्षाओं को दर्शाने में पर्याप्त प्रयास इनके माध्यम से किया गया है। वर्तमान समय में हिन्दी में प्रकाशित पत्रिका अथवा अखबार केवल हिन्दी भाषी लोगों तक ही सीमित नहीं रही है। अन्य भाषा-भाषी भी समान रूप से पढ़ते हैं। विशेष रूप से वर्तमान समय में समादृत मीडिया के क्षेत्र में युवाओं का आकर्षण बढ़ने के कारण ये युवा अपनी मातृभाषा के साथ-साथ हिन्दी में भी समान रूप से दक्षता वृद्धि करना चाहते हैं। सुख की बात यह है कि हिन्दी पत्रकारिता में अहिन्दी भाषी लोग भी आजकल जुड़ने लगे हैं जो हिन्दी प्रचार-प्रसार की ही सूचना देती है। हिन्दी आज रोजी-रोटी की भी भाषा बन गयी है। ममतामयी हिन्दी किसी को विमुख नहीं करती है। हिन्दी पत्रकारिता के सहारे आज असम जैसी अहिन्दी भाषी प्रदेश की युवा दुनिया के विभिन्न देश भ्रमण करके अपना ज्ञान बढ़ाने के साथ-साथ हिन्दी पत्रकारिता को भी समृद्ध किया है। वर्तमान समय में पत्रकारिता की दायरा केवल समाचार परोसने तक ही सीमित नहीं है, बल्कि समाज का हर वर्ग की आशा-आकांक्षाओं के भी वार्ता-वाहक बन गया है। असम में हिन्दी पत्रकारिता की अपार संभावनाएँ सामने पड़ी हैं। आशा है अनागत समय में असम की हिन्दी पत्रकारिता ऊँचाई को प्राप्त करेगी।

* सहायक अध्यापिका, हिन्दी विभाग
नगाँव गर्ल्स कॉलेज-782002 (असम)
मो.